.

सूफी संत कवि मलिक मुहम्मद जायसी

डॉ॰ कुमार मनीष, अतिथि शिक्षक, हिंदी विभाग, जी॰ बी॰ कॉलेज
नवगछिआ, ति॰ माँ॰ भा॰ वि॰ भागलपुर-८१२००७

बीज शब्द: जन्म, वैराग्य, परम ज्योति, मसनवी शैली, सूफी साहित्य

शोध सार: हिन्दी साहित्य को मलिक मुहम्मद जायसी ईश्वर का वरदान हैं। जायसी मध्यकालीन भक्तियुग की निर्गुण धारा की प्रेमाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं। उनका जन्म स्थल कंचाना मुहल्ला, जायस नगर, अमेठी, उ0प्र0 में है। कवि ने फारसी की मसनवी शैली में काव्य की रचना की है। इनके काव्य में लौकिक प्रेम के ब्याज से अलौकिक प्रेम की व्यंजना हुई है।

साहित्य के आकाश में मलिक मुहम्मद जायसी रूपी नक्षत्र का उदित होना मानवता को ईस्वर का अमूल्य उपहार है । जायसी का जनम-स्थल जायस नगर के कंचाना मोहल्ला में है। यह जिला अमेठी, उत्तर प्रदेश में अवस्थित है। वे मध्यकालीन भक्तियुग की निर्गुण धारा की प्रेममार्गी शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं । वे स्वयं के जन्म के विषय में लिखते हैं :

> "जायस नगर धरम अस्थानू। तहाँ आइ कवि कीन्ह बखानू॥"[1]

इस चौपाई का अर्थ इस प्रकार है:

जायस नगर धर्म का स्थान है । वहाँ आकर कवि ने कविता की रचना की । कवि की दूसरी कृति 'आखिरी कलाम' में स्वीकारोक्ति से भी इस सत्य की प्रामाणिकता सिद्ध होती है । वे लिखते हैं :

"जायस नगर मोर अस्थानू । नगर क नॉव आदि उदयानू।।
तहाँ दिवस दस पहुने आएउँ । भा बैराग बहुत सुख पाए।।"[2]

इस चौपाई का अर्थ इस प्रकार है :

"(आखिरी कलाम १०/१-२) जायस नगर में मेरा स्थान है । पहले उस नगर का नाम उद्यान था। मैं वहाँ दस दिनों के लिये पाहुने के रूप में आया था, पर वहीं मुझे वैराग्य हो गया और बहुत सुख मिला । दिनदस का अर्थ 'पदमावत' में थोड़े समय के लिये है । 'पहुने आएउँ' का संकेत कुछ विद्वानों ने ऐसा माना है कि कवि ने जायस में जन्म लिया था । किन्तु इन शब्दों का सीधा अर्थ भी लिया जा सकता है कि सचमुच जायसी किसी दूसरी जगह से जायस में कुछ दिनों के लिये पाहुने के रूप में आये थे । किन्तु वहाँ आकर उनके जीवन में एक ऐसी घटना घटी जिसने जीवन के प्रवाह ही बदल डाला और उन्हें अनुभव के एक नए लोक में पँहुचा दिया । उनके हृदय में वैराग्य की पहली किरण स्फुटित हुई । हृदय में कोई अपूर्व ज्योति भर गई। उसीका रूप नेत्रों में समा गया। सर्वत्र उसी के दर्शन होने लगे । संसार के मानदंड बदल गए। विषयों से मन हट गया। हृदय में एक ही आकुलता छा गई कि किस प्रकार उस परम ज्योति या रूप की साक्षात् प्राप्ति हो।

जायसी ने अपनी उस वैराग्य अवस्था का सच्चा वर्णन किया है-

------भा वैराग्व बहुत सुख पाएउँ ।

सुख भा सोच एक दुख मानो । ओहि बिनु जिवन मरन कै जानों ।। "[3]

जायसी का जन्म ९वीं सदी हिज़री (१३९८-१४९४) के मध्य हुआ था । आचार्य रामचंद्र शुक्ल 'जायसी ग्रंथावली' की भूमिका में लिखते हैं: "मलिक मुहम्मद जायसी ने अपने जन्म के सम्बन्ध में लिखा है-

भा अवतार मोर नौ सदी । तीस बरस ऊपर कवि बदी ।।

इन पंक्तियों का ठीक तात्पर्य नहीं खुलता । 'नव सदी' ही पाठ मानें, तो जन्म काल ९०० हिज़री (सन १४९२ के लगभग) ठहरता है।"[4]

जायसी जन्म के तीस वर्ष बाद कविता करने लगे । जायसी ने बाबर के समय फ़ारसी में 'आखिरी कलाम' (१५२८ ईस्वी) की रचना की। उसमें कवि ने लिखा है कि उनके जन्म के समय भीषण भूकंप आया था। डॉ॰ वासुदेव शरण अग्रवाल के अनुसार १५०५ ईस्वी (९११ हिजरी) में एक भूकंप हुआ था । जायसी 'आखिरी कलाम' में लिखते हैं :

"आवत अधत चार बिधि ठाना । भा भूकंप जगत में अकुलाना"[5]।।

जायसी ने बाबर से लेकर शेरशाह के समय तक काव्य की रचना की है। उन्होंने फारसी की मसनवी शैली में काव्य की रचना की है। इस शैली में साहेवक्त की प्रशंसा की परंपरा है। वे 'पदमावत' के 'स्तुति खंड' में इस परंपरा का निर्वाह करते हुए लिखते हैं:

"सेरसाहि देहली सुलतानू। चारिउ खंड तपै जस भानू ॥

ओही छाज छात औ पाटा। सब राजै भुई धरा लिलाटा।

जाति सूर औ खाँड़े सूरा। औ सुनि बुधिवंत सबै गुन पूरा॥

सूर नवाए नवखंड नवई। सातउ दीप दुनी सब नई॥

तहँ लगि राज खड़ग करि लीन्हा। इसकंदर जुलकरन जो कीन्हा॥

हाथ सुलेमा केरि अँगूठी। जग कहँ दान दीन्ह भरि मूठी॥

औं अति गरू भूमिपति भारी। टेकि भूमि सब सिहिटि सँभारी॥

दीन्ह असीस मुहम्मद, करहु जुगहि जुग राज।

बादसाह तुम जगत के जग तुम्हार मुहताज॥"[6]

मलिक मुहम्मद जायसी सूफी काव्य-परंपरा के महान कवि हैं । उनकी रचनाओं में सूफी साहित्य की विशेषताएँ¡ चरमोत्कर्ष पर पहुँची हैं । आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इस काव्य-परंपरा को भक्तिकाल की निर्गुण काव्य-धारा की प्रेममार्गी शाखा के नाम से अभिहित किया है। वे 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में लिखते हैं : "यह निर्गुण धारा दो शाखाओं में विभक्त हुई- एक ज्ञानाश्रयी शाखा और दूसरी शुद्‌ध प्रेममार्गी शाखा (सूफियों की)।"[7] इस शाखा के सभी कवियों ने कल्पित कहानियों के माध्यम से सूफियों की प्रेम साधना को निरूपित किया है । इस कथा में लौकिक प्रेम साधना के ब्याज से अलौकिक प्रेम साधना के मार्ग की व्यंजना हुई है । एक साधारण प्रेम कथा में प्रेम की अति गूढ़ व्यंजना

हुई है । इस प्रेम कथा में 'प्रेम' केंद्रीय तत्त्व की भूमिका में है । जिसका अवलम्ब प्राप्त कर साधक परम सत्ता तक पहुँचता है ।

जायसी अपने युग के प्रसिद्ध फकीर माने जाते थे। अमेठी के राजघराने में उनका बहुत मान था । वे बदसूरत थे । उन्हें एक आँख और एक कान से दिखाई और सुनाई नहीं पड़ता था ।वे इन अवगुणों को ईस्वर की कृपा मानते थे । कवि मलिक मुहम्मद जायसी एक आँख को ईश्वर का आशीर्वाद मानते हैं । वे लिखते हैं :

"एक नयन कवि मुहमद गुनी। सोइ विमोहा जेहि कबि सुनी ।।

चाँद जेस जग विधि औतारा । दीन्ह कलंक, कीन्ह उजियारा ।।

जग सूझा एकै नयनाहाँ। उभा सूक जस नखतन्ह माहाँ ।।

जौ लहि अंवहि जम न होई । तौ लहि सुगँध बसाइ न सोई ।।

कीन्ह समुद्र पानि जो खारा। तौ अति भयउ असूझ अपारा ।

जौ सुमेरु तिरसूल बिनापा। भा कंचन गिरि, लाग अकासा ।।

एक नयन जस दरपन, औ निरमल तेहि भाउ।

सब रुपवंतइ पाउँ गहि मुख जोहहिं कै चाउ ।।"[8]

कवि एक अन्य स्थल पर 'नागमती-संदेश खंड' में अपने एक आँख के होने का उल्लेख करते हुए लिखते हैं :

"मुहमद बाइँ दिसि तजा, एक स्त्रवन एक आँखि।

जब तें दाहिन होइ मिला, बोल पपीहा पाँखि ॥"[9]

ये एक बार शेरशाह के दरबार में गए थे। वहाँ इनके रूप को देखकर सब हँसने लगे । तब इन्होंने कहा 'मोहिका हँसेसि कि कोहरहि? यह सुनकर शेरशाह लज्जित हुए और क्षमा माँगी ।

इनके समय में ही इनके बनाये भाव पूर्ण गीत और दोहे इनके शिष्य गाया करते थे। एकबार अमेठी के राजा ने जायसी के शिष्यों के मुँह से उनके बनाये हुए दोहे सुने। वह दोहा इस प्रकार है:

"कँवल जो बिगसा मानसर, बिनु जल गएउ सुखाइ।
कबहुँ बेलि फिरि पलुहै, जौ पिउ सींचै आइ॥"[10]

इसे सुनकर राजा बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने जायसी के शिष्यों से पूछा कि यह दोहा किसका बनाया हुआ है ।शिष्यों ने मलिक मुहम्मद जायसी का नाम कहा। इसे सुनकर अमेठी के राजा ने जायसी को बहुत सम्मान और विनय के साथ महल में बुलाया।

इन्होंने कई पुस्तकें लिखीं हैं। जिनमें तीन पुस्तकें प्रमुख हैं- 'पद्मावत', 'अखरावट' और 'आखिरी कलाम' । इसमें 'पद्मावत' की बहुत प्रसिद्धि हुई ।

कवि मलिक मुहम्मद जायसी सैयद अशरफ को अपना गुरु मानते थे ।

वे 'पद्मावत' के 'स्तुति खंड' में लिखते हैं:

"सैय्यद असरफ पीर पियारा। जेहि मोहिं पंथ दीन्ह उँजियारा ॥
लेसा हियें प्रेम कर दीया। उठी जोत भा निरमल हीया॥"[11]

दूसरी जगह उन्होंने गुरु मोहदी को अपना गुरु कहा है

वे 'पद्मावत' में लिखते हैं:

"गुरु मोह्दी खेवक मैं सेवा | जलै उताइल जेहि कर खेवा ||
अगुवा भयउ सेख बुरहानू | पंथ लाइ मोहि दीन्ह गियानू ||"[12]

जायसी के जायस में चार मित्र थे | यूसुफ़ मलिक, सालार कादिम, सलोने मियाँ और बड़े शेख़। यूसुफ़ मलिक बहुत बड़े पंडित और ज्ञानी पुरुष थे |

उसने सबसे पहले भेद की बात या रहस्य का ज्ञान प्राप्त किया | दूसरा सलार था, जिसके मन में मारकाट (काँडन) की बात भरी थी | उसकी भुजा सदा खड्ग दान में उठती थी | तीसरा मियाँ सलोने था, जो सिंह जैसा अद्भुत वीर था ; वह रणभूमि में तलवार लेकर जूझता था | चौथे बड़े शेख जी हैं, जो भारी सिद्ध कहे जाते हैं |

सिद्धों ने उन्हें प्रणाम कर बड़ा स्वीकार किया है | चारों ने चौदह विद्याएँ पढ़ी हैं | ईस्वर ने उन्हें संगति करने योग्य बनाया है | जो वृक्ष चंदन के पास होते हैं, वे भी उसकी सुगंधि के भिधने से चंदन हो जाते हैं | ये चारों मित्र मुहम्मद से मिलकर उसके साथ एक चित्त हो गए हैं | इस जगत में उनका साथ निभ गया, तो उस लोक में भी बिछुड़ना कैसे संभव है |

"चारि मीत कवि मुहमद पाए। जोरि मिताई सिर पँहुचाए ||

यूसुफ मलिक पंडित बहु ज्ञानी। पहिलै भेदबात वै जानी ।।
पुनि सलार कादिम मतिमाहाँ। खाँड़े दान उभे निति बाहाँ ।।
मियाँ सलोने सिय बरियारू । बीर खेतरन खडग जुझारू ।।
सेख बड़े बड़ सिद्ध बखाना। किए आदेस सिद्ध बड़ माना ।।
चारिउ चतुरदसा गुन पढ़े।औ संजोग गोसाई गढ़े ।।
बिरिछ होइ जो चंदन पासा। चंदन होइ बेधि तेहि बासा।।
मुहमद चारिउ मीत मिलि भए जो एकै चित्त।
एहि जग साथ जो निबहा, ओहि जग बिछुरन कित्त ॥"[13]

कवि ने नौ सौ सत्ताइस हिज़री में 'पद्मावत' की रचना प्रारंभ की |

वे लिखते हैं:

"सन नव सै सत्ताइस अहा। कथा अरंभ बैन कवि कहा।
सिंघलदीप पदमिनी रानी। रतनसेन चितउर गढ़ आनी॥
अलउदीन देहली सुलतानू। राधौ चेतन कीन्ह बखानू ॥
सुना साहि गढ़ छेंका आई। हिंदू तुरकन्ह भई लराई॥
आदि अंत जस गाथा अहै। लिखि भाखा चौपाई कहै॥
कवि बियास कँवला रस पूरी। दूरि सो नियर, नियर सो दूरी॥
नियरे दूर फूल जस काँटा। दूरि जो नियरे, जस गुड़ चाँटा ॥

भँवर आइ बनखंड सन लेइ कँवल कै बास।
दादुर बास न पावई भलहि जो आछे पास ॥"14

मलिक मुहम्मद जायसी का बचपन जायस नगर और ननिहाल मानिकपुर में व्यतीत हुआ था। उनके पिता का नाम शेख़ मुमरेज था। इनके नाना का नाम शेख अलहदाद था। बचपन में इन पर शीतला का असाधारण प्रकोप हुआ था। जिसमें इनके जीवन की ज्योति ही बूझ रही थी। इनकी माँ के द्वारा शाहमदार के दरगाह पर की गई प्रार्थना सुन ली गई। परन्तु इनकी एक ऑख और एक कान जाती रही। आप बचपन में ही अनाथ हो गए । जायसी जीवन की सभी विपरीत परिस्थितियों को ईस्वर का वरदान समझते थे।

उनकी संगति साधु-फकीरों से हो गई । वे देश का पर्यटन कर ज्ञानार्जन करने लगे। उन्हें इस्लाम और हिन्दू धर्म का बहुत व्यापक ज्ञान हो गया। उनके हृदय में सभी धर्मों के लिए समान आदर एवं सम्मान का भाव था। उनकी रचनाओं में उनके हृदय की उच्च भावना का प्रतिबिम्ब दिखाई पड़ता है।

वे 'अखरावट' में लिखते हैं कि जिस प्रकार हाथी का नाम सुनकर, अंधों के समूह हाथी के जिस स्थल का स्पर्श करते हैं, वे उसे वैसा ही बतलाते हैं। ठीक उसी प्रकार, ईस्वर के सम्बन्ध में जो जितना जान पातें हैं, वे उसे उतना ही बतलाते हैं । जायसी का मत है कि आकाश में जितने नक्षत्र हैं, उतने ही मार्ग ईस्वर तक पहुँचने के हैं।

जायसी ने ईस्वर तक पहुँचने के सभी मार्गों में मुहम्मद साहब के दिखाए हुए मार्ग पर, अपनी श्रद्धा और विश्वास जताया है।

"सुनि हस्ती कर नावँ, अँधरन्ह टोवा धाइ कै।
जेइ टोवा जेहि ठाएँ, मुहमद सो तैसै कहा।।
धा धावहु तेहि मारग लागे। जेहि निसतार होइ सब आगे॥
बिधिना के मारग है ते ते। सरग नखत तन रोवाँ जेते॥
जेइ हेरा तेइ तहँवै पावा। भा संतोष, समुझि मन गावा॥
तेहि महँ पंथ कहौं भल गाई। जेहि दूनौ जग छाज बड़ाई॥
सो बड़ पंथ मुहम्मद केरा। है निरमल कबिलास बसेरा॥
लिखि पुरान बिधि पठवा साँचा। भा परवाँन, दुवौ जग बाँचा॥
सुनत ताहि नारद उठि भागै। छूटै पाप, पुन्नि सुनि लागै॥
वह मारग जो पावै, सो पहुँचै भव पार।
जो भूला होइ अनतहि, तेहि लूटा बटपार ॥"[15]

मलिक मुहम्मद जायसी एक गृहस्थ किसान के रूप में ही जायस में रहते थे। वे बचपन से ही ईस्वर भक्त और साधु स्वभाव के थे। उन्हें एक पुत्र था। जिसकी मृत्यु मकान की दीवार गिरने से हो गई थी। उसके बाद वे संसार से विरक्त हो गए। उनकी मनोवृत्ति ईस्वर की साधना में और बढ़ गई।

उनकी प्रमुख रचनाओं में 'पद्मावत' काफ़ी प्रसिद्ध हुई। जिसमें चित्तौरगढ़ के राजा रत्नसेन और सिंहलगढ़ की राजकुमारी पद्मावती की प्रेम कथा के आधार पर प्रेमकाव्य की रचना हुई है। इस प्रेम कथा में सूफी साधना के विभिन्न सोपानों को निरूपित किया गया है। कवि की साधना सूफियों की प्रेम और विरह की साधना है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल 'जायसी ग्रंथावली' की भूमिका में जायसी की एक प्रसिद्ध कहानी का वर्णन करते हुए लिखते हैं :

"उनका नियम था कि जब वे अपने खेतों में होते, तब अपना खाना वहीं मँगा लिया करते थे। वे खाना अकेले कभी नहीं खातें; जो आसपास दिखाई पड़ता था उसके साथ बैठकर खाते थे।

एक दिन उन्हें इधर - उधर कोई न दिखाई पडा I बहुत देर तक आसरा देखते -देखते अंत में एक कोढ़ी दिखाई पढ़ा। जायसी ने बड़े आग्रह से उसे अपने साथ खाने को बिठाया और एक ही भोजन में उसके साथ भोजन करने लगे। उसके शरीर में कोढ़ चू रहा था। कुछ थोड़ा-सा मवाद भोजन में भी चू पड़ा। जायसी ने उस अंश को खाने के लिए उठाया, पर उस कोढ़ी ने हाथ थाम लिया। और कहा, 'इसे मैं खाऊँगा, आप साफ हिस्सा खाइए।' पर जायसी झट से उसे खा गए। इसके पीछे वह कोढ़ी अदृश्य हो गए।

इस घटना के उपरांत जायसी की मनोवृत्ति ईस्वर की ओर और भी अधिक हो गई। उक्त घटना का संकेत लोग 'अखरावट' के इस दोहे में बताते हैं:

बुंदहि समुद्र समान, यह अचरज कासौं कहौं।

जो हेरा सो हेरान, मुहमद आपुहिं आपु महँ।।''[16]

आचार्य रामचंद्र शुक्ल 'जायसी ग्रंथावली' की भूमिका में जायसी के मृत्युकाल के सम्बन्ध में लिखते हैं:

" जीवन के अंतिम दिनों में जायसी अमेठी से कुछ दूर एक घने जंगल में रहा करते थे। कहते हैं कि उनकी मृत्यु विचित्र ढंग से हुई। जब उनका अंतिम समय निकट आया, तब उन्होंने अमेठी के राजा से कह दिया कि मैं किसी शिकारी की गोली खाकर मरूँगा। इसपर अमेठी के राजा ने आस_पास के जंगलों में शिकार की मनाही कर दी। जिस जंगल में जायसी रहते थे, उसमें एक दिन एक शिकारी को एक बड़ा भारी बाघ दिखाई पड़ा। उसने डरकर उसपर गोली छोड़ दी। पास जाकर देखा तो बाघ के स्थान पर जायसी मरे पड़े थे। कहते हैं कि जायसी कभी_कभी योगबल से इस प्रकार के रूप धारण कर लिया करते थे।"[17]

विभिन्न विद्वानों के मतानुसार मलिक मुहम्मद जायसी का मृत्युकाल 4 रज्जब 949 हिजरी (सन् 1542 ई०) है।

संदर्भ:

1. शुक्ल, आचार्य रामचंद्र, जायसी ग्रंथावली, प्रथम संस्करण, इलाहाबाद, जयभारती प्रकाशन,२००५, पृष्ट सं०-8, दोहा-23
2. वही, आखिरी कलाम, पृष्ट सं०-320, दोहा-10
3. अग्रवाल, डॉ० वासुदेव शरण, पद्मावत, (मूल एवम संजीवनी व्याख्या), प्रथम संस्करण, लोकभारती प्रकाशन, २००७, प्राक्कथन,पृष्ट सं०-52
4. शुक्ल, आचार्य रामचंद्र, जायसी ग्रंथावली, प्रथम संस्करण, इलाहाबाद, जयभारती प्रकाशन,२००५, पृष्ट सं०- 4-5
5. वही, आखिरी कलाम, पृष्ट सं०-318, दोहा-4
6. वही, स्तुति खंड, पृष्ट सं०-5
7. शुक्ल, आचार्य रामचंद्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, भक्तिकाल : प्र० १ - सामान्य परिचय, पृ**0-39**
8. शुक्ल, आचार्य रामचंद्र, जायसी ग्रंथावली, प्रथम संस्करण, इलाहाबाद, जयभारती प्रकाशन,२००५, भूमिका, पृष्ट सं०-8
9. वही, नागमती संदेश खंड, पृष्ट सं०-153

10.वही, नागमती वियोग खंड, पृष्ट सं॰-147

11.वही, 'स्तुति खंड', पृष्ट सं॰-7, दोहा-18

12.वही, 'स्तुति खंड', पृष्ट सं॰-7, दोहा-20

13.वही, 'स्तुति खंड', पृष्ट सं॰-8, दोहा-22

14.वही, 'स्तुति खंड', पृष्ट सं॰-9, दोहा-24

15.वही, अखरावट, पृष्ट सं॰-300, दोहा-25

16.वही, भूमिका, पृष्ट सं॰-6

17. वही, भूमिका, पृष्ट सं॰-7